उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया : व्याख्या के आधार

अध्याय 10

बाइबल संस्कृति और आधुनिक अनुप्रयोग

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना 1
आधार 2
महत्व 2
विरोधी आदर्श 5
विविधता 6
विकास 8
महत्व 9
विरोधी आदर्श 10
विविधता 12
अनुप्रयोग 13
महत्व 14
विरोधी आदर्श 15
विविधता 17
उपसंहार 19

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया :
व्याख्या के आधार

अध्याय दस

बाइबल संस्कृति और आधुनिक अनुप्रयोग

प्रस्तावना

किसी न किसी समय पर, बाइबल पढ़ाने वाले हर एक व्यक्ति ने किसी को यह पूछते हुए सुना है, "क्या बाइबल का यह हिस्सा एकदम सांस्कृतिक नहीं है?" उनका आमतौर पर यह अर्थ होता है कि पवित्र शास्त्र के कुछ अंश बाइबल के समय की प्राचीन संस्कृतियों में इतने अंतर्निहित हैं कि संभवतः वे आज हमारे लिए लागू नहीं हो सकते हैं। इसलिए, बाइबल के "सांस्कृतिक" अनुच्छेदों और आधुनिक जीवन पर जो अनुच्छेद लागू होते हैं, उनके बीच अंतर करने की कोशिश में मसीही लोग अक्सर बहुत समय व्यतीत कर देते हैं।

इस अध्याय में, हम एक अलग दृष्टिकोण प्रस्तावित करने जा रहे हैं। पवित्र शास्त्र के हिस्सों का सांस्कृतिक या अनुप्रयोज्य होना मानने के बजाय, हम देखेंगे कि बाइबल के हर एक हिस्से सांस्कृतिक एवं अनुप्रयोज्य दोनों हैं। संपूर्ण बाइबल प्राचीन सांस्कृतिक संदर्भ को प्रतिबिंबित करती है, लेकिन इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता हम कौन हैं, या कहाँ या कब हम रहे हैं, यह फिर भी परमेश्वर का वचन है, जिसे हर एक व्यक्ति के लिए किसी न किसी तरीके से लागू किया जा सकता है।

हमारी श्रृंखला *उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया* का यह दसवां अध्याय है: *व्याख्या के आधार,* और हमने इसका शीर्षक रखा है "बाइबल की संस्कृति और आधुनिक अनुप्रयोग।" इस अध्याय में, हम देखेंगे कि पवित्र शास्त्र के सांस्कृतिक आयामों को आधुनिक संसार के लिए बाइबल के हमारे अनुप्रयोगों को कैसे प्रभावित करना चाहिए।

जैसा कि हमने पहले के अध्यायों में कहा है, जब भी हम बाइबल के अनुच्छेदों को हमारे समय में लागू करते हैं, तो हमें पवित्र शास्त्र के मूल श्रोताओं और आधुनिक श्रोताओं के बीच युगांतरिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत दूरी को ध्यान में रखना चाहिए। हालाँकि इन तीनों विचारों को एक दूसरे से पूरी तरह से अलग नहीं किया जा सकता है, फिर भी हम विशेष रूप से उन सांस्कृतिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं, जो तब कार्यरत होते हैं जब हम पवित्र शास्त्र के मूल अर्थ से आधुनिक अनुप्रयोग की ओर बढ़ते हैं।

संस्कृति को परिभाषित करने के कई तरीके हैं। लेकिन उन दृष्टिकोणों का अनुसरण करते हुए जो आमतौर पर आधुनिक समाजशास्त्र और मानव-विज्ञान में प्रकट होते हैं, हम संस्कृति को निम्न रीति से परिभाषित करेंगे:

> **अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं के परस्पर प्रतिच्छेदन करने वाले पैटर्न जो किसी समुदाय को चित्रित करते हैं**

जैसे कि यह परिभाषा बताती है, संस्कृति में भाषा, कला, आराधना, प्रौद्योगिकी, पास्परिक संबंध और सामाजिक अधिकार जैसे परिच्छेदन करने वाले पैटर्न का एक स्पेक्ट्रम शामिल है। और इन प्रतिच्छेदन करने वाले पैटर्न में साझा किए गए अवधारणाएं, व्यवहार और भावनाएं शामिल हैं — हम जो विश्वास करते हैं, कार्य करते हैं और महसूस करते हैं। इसलिए, जब हम संस्कृतियों की बात करते हैं, तो हमारे ध्यान में यह बात है, कि ये विशेषताएं किसी समुदाय को कैसे चित्रित करते हैं — चाहे वह एक परिवार हो, या कोई जातीय समूह, एक सामाजिक संगठन, कोई धार्मिक संघ, एक राष्ट्र या यहाँ तक कि चाहे संपूर्ण मानव जाति हो।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यह अध्याय बाइबल की संस्कृति और आधुनिक अनुप्रयोग के तीन आयामों पर ध्यान केंद्रित करेगा: सबसे पहले, हम बाइबल के शुरूआती अध्यायों में पाए जाने वाली संस्कृति के बाइबल वाले आधारों की जाँच करेंगे। दूसरा, हम संस्कृति के उन बहुत से बाइबल के विकासों का पता लगाएंगे जो पुराने और नए नियमों में हुए थे। और तीसरा, हम देखेंगे कि बाइबल के इन सांस्कृतिक पहलुओं को हमारे पवित्र शास्त्र के आधुनिक अनुप्रयोग को कैसे प्रभावित करना चाहिए। आइए सबसे पहले संस्कृति के बाइबल वाले आधारों पर दृष्टि डालें।

आधार

जब हम संस्कृति के बाइबल वाले आधारों पर विचार करते हैं, तो हम उत्पत्ति 1–11 की खोज करने के द्वारा शुरू करेंगे। सबसे पहले, हम देखेंगे कि ये अध्याय कैसे संस्कृति के महत्व को स्थापित करते हैं। दूसरा, हम इस बात पर ध्यान देंगे कि दो विरोधी सांस्कृतिक आदर्शों का परिचय वे कैसे देते हैं। और तीसरा, हम ध्यान देंगे कि परमेश्वर के विश्वासपात्र सेवकों के बीच सांस्कृतिक विविधता के लिए पवित्र शास्त्र के शुरूआती अध्याय मंच को कैसे तैयार करते हैं। आइए संस्कृति के महत्व के साथ शुरू करें।

महत्व

उत्पत्ति के पहले ग्यारह अध्याय सृष्टि से लेकर अब्राहम के दिनों तक संसार के इतिहास का विवरण देते हैं। वे हमारे अध्ययन के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे संसार और मानव संस्कृति के लिए परमेश्वर के आदर्श पैटर्न को प्रस्तुत करते हैं। इस रीति से, वे न सिर्फ बाकी की उत्पत्ति के अध्ययन के लिए, बल्कि बाकी के पवित्र शास्त्र के लिए भी हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

संस्कृति के आधार पहली बार उत्पत्ति 1:28 में दिखाई देते हैं, वह अनुच्छेद जिसे अक्सर “सांस्कृतिक अध्यादेश” कहा जाता है। यहाँ पर, परमेश्वर ने मानवता से कहा था:

> फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो। और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो (उत्पत्ति 1:28)।

सांस्कृतिक अध्यादेश के महत्व को समझने और लागू करने के लिए, हमें उन कुछ बातों को स्मरण करने की आवश्यकता है जिन्हें हमने पहले के अध्यायों में देखा है। इतिहास के लिए परमेश्वर का अंतिम निर्णायक लक्ष्य हमेशा से संसार को अपनी दृश्यमान महिमा से भरने का रहा है, ताकि हर एक प्राणी सदा के लिए उसकी आराधना करे। और जब परमेश्वर ने सृष्टि के प्रारंभिक क्रम को स्थापित कर दिया, तो सांस्कृतिक अध्यादेश ने संकेत दिया कि परमेश्वर की महिमा के अंतिम निर्णायक प्रदर्शन की तैयारी के लिए सृष्टि को और विकसित करना, मानवता की जिम्मेदारी थी।

> परमेश्वर ने मानवता को सबसे सरल शब्दों में सांस्कृतिक अध्यादेश दिया, ताकि संसार और यह सृष्टि उसकी महिमा से भर जाए। बहुत कुछ किसी प्राचीन मंदिर के समान, किसी घर के निर्माण होने के रूप में, हम सृष्टि के चित्र को देखते हैं। और जब मंदिर बन जाता है, तो जिस देवता ने उसका निर्माण करवाया, वह उसमें वास करता है। और इसी तरह, सृष्टि के बारे में बाइबल का दृष्टिकोण यह है, कि पूरी

पृथ्वी पवित्र मंदिर होने के लिए, परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिए बनाई गई थी। लेकिन उस मंदिर में परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने वाली किसी मूर्ति — किसी पक्षी या शेर या कुछ इन्ही के समान मूर्ति को रखने के बजाय — परमेश्वर ने अपने स्वरूप को धारण करने वाले पुरुष और स्त्री को रखा। और सांस्कृतिक अध्यादेश देने में, परमेश्वर वास्तव में कह रहा था, जाओ मेरे स्वरूप की संख्यावृद्धि करो, पृथ्वी में भर जाओ, और उसे वश में कर लो, एक याजक के रूप में उसके ऊपर अधिकार का प्रयोग करो। और इस तरह, सांस्कृतिक अध्यादेश इसलिए था, कि परमेश्वर के स्वरूप धारक बनाए गए संसार के ऊपर परमेश्वर के प्रभुत्व का प्रयोग करेंगे, ताकि पृथ्वी उस परमेश्वर के लिए एक निवास स्थान बन जाए जिसने इसे बनाया था, ठीक उसी तरह जैसे उसका स्वर्ग का सिंहासन कक्ष है, जिसकी झलक हम यशायाह 6 जैसे स्थानों में देखते हैं, उसी तरह पृथ्वी को भी होना था। और इसलिए, उदाहरण के लिए, हमें बताने हेतु पुराने नियम के लिए यह कोई नई बात नहीं है, कि पृथ्वी परमेश्वर की महिमा से भर जाएगी जैसे पानी समुद्र में भर जाता है, क्योंकि इसके लिए परमेश्वर का यही मूल डिजाइन था।

— रेव्ह. माइक ग्लोडो

उत्पत्ति 1 में ठीक बाइबल की शुरूआत में, पाप में पतन से पहले, परमेश्वर एक बहुत ही महत्वपूर्ण अध्यादेश या निर्देशों का संकलन — आदम और हव्वा को देता है — वास्तव में, जिसे हम लगभग कह सकते हैं एक ऐसा दृष्टिकोण, और वह है कि वाटिका की सुंदरता को, उसकी व्यवस्था और उत्कृष्टता को लेना है और उसे पूरे संसार भर में फैलाना है। और बाइबल की कहानी बहुत कुछ पाप में पतन और ऐसा करने में विफल रहने, और फिर दूसरे आदम, यीशु मसीह और उसकी दुल्हन, कलीसिया के माध्यम से उसी अध्यादेश को फिर से शुरू करने के बारे में है। और इसलिए उत्पत्ति 1 से वह सांस्कृतिक अध्यादेश, वह सृष्टि वाला अध्यादेश, वह मूल अध्यादेश, वास्तव में बाइबल के संदेश के केंद्र में है, और, मैं सुझाव दूंगा, यह वास्तव में बहुत कुछ जो उद्धार है उस बारे में है। एक विद्वान ने उद्धार को "सृष्टि की पुनः-प्राप्ति" कहा है। और मुझे लगता है कि यह एक सुंदर छवि है। यह उस बारे में कि बाइबल क्या है एक सुंदर व्यापक समझ है। मैंने अक्सर बाइबल के संदेश का वर्णन परमेश्वर द्वारा अपने शासन, या अपने राज्य को, स्वर्ग से पृथ्वी पर, सृष्टि से नई सृष्टि के लिए पुनः स्थापित करने के रूपों में किया है। और यह अदला-बदली इन दोनों ध्रुवों, इन दोनों अक्षों पर होती है, जहाँ परमेश्वर स्वर्गीय वास्तविकताओं को पूरी तरह से, पूर्णतः सांसारिक वास्तविकताएं बना रहा है, और सृष्टि से नई सृष्टि के अंतिम लक्ष्य के लिए परमेश्वर के कार्य करने की लौकिक समझ भी प्रदान करता है। और उसके केंद्र में यह विचार है कि परमेश्वर अपनी सुंदरता, अपनी उत्कृष्टता, या और अधिक बाइबल की भाषा में, "अपनी महिमा" को पूरी पृथ्वी भर में फैला रहा है। और यही वह बुलाहट है जो परमेश्वर की कलीसिया में उद्धार पाई मानवता के साथ-साथ व्यक्तियों के रूप में सभी मनुष्यों के लिए है।

— डॉ. जॉनथन टी. पेनिंगटन

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हम इसे उत्पत्ति 1:26 में देखते हैं, जहाँ परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाएं।" प्राचीन संसार में, राष्ट्रों के राजाओं को देवता का स्वरूप कहा जाता था, कुछ इसलिए क्योंकि उनका शाही काम अपने देवताओं की इच्छा को जानना था और उसके अनुसार अपनी संस्कृतियों का निर्माण करना था। इस प्रकाश में, उत्पत्ति के शुरूआती अध्याय इस बात को स्पष्ट करते हैं कि सभी मनुष्यों को पृथ्वी पर परमेश्वर की इच्छा को आगे बढ़ाने के लिए, इस प्रकार के शाही सांस्कृतिक कार्य को करने हेतु बनाया गया था।

इसके अलावा, उत्पत्ति 2 बताता है कि परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप प्रत्येक सांस्कृतिक विकास परमेश्वर के प्रति एक पवित्र याजकीय सेवा है। पद 15 में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अपने पवित्र वाटिका में, "उसमें काम करने और उसकी देखभाल करने के लिए" रखा। यह अभिव्यक्ति दो इब्रानी क्रियाओं का एक असामान्य संयोजन है: *आवद,* आमतौर पर "काम करने" या "मेहनत करने के लिए" अनुवाद किया जाता है, और *शामर,* आमतौर पर "देखभाल करने" या "रक्षा करने के लिए" अनुवादित किया जाता है। मूसा ने इन दोनों शब्दों का सिर्फ एक और बार एक साथ उपयोग किया — गिनती 3:8 में जब उसने मिलाप वाले तम्बू में परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति के समक्ष लेवीय याजकों की सेवा का वर्णन किया।

इस तरह, वास्तव में, उत्पत्ति के शुरूआती अध्याय बाइबल के इस आधारभूत परिप्रेक्ष्य को स्थापित करते हैं कि संस्कृति हमारे अस्तित्व का कोई मामूली आयाम नहीं है। इसके बजाय, यह परमेश्वर के प्रति हमारी शाही और याजकीय सेवा है। परमेश्वर ने हमें अपनी दृश्यमान महिमा के अंतिम प्रदर्शन की तैयारी में पृथ्वी को भरने, विकसित, व्यवस्थित, सुशोभित, और पवित्र करने के लिए ठहराया है।

> मैं सोचता हूँ कि यह समझने के लिए, कि परमेश्वर ने मनुष्य को सांस्कृतिक अध्यादेश क्यों दिया, यह स्मरण रखना महत्वपूर्ण है कि मनुष्य को स्वयं परमेश्वर के स्वरूप में विशिष्ट रूप से रचा गया था। इस तरह दिव्य स्वरूप का एक संरचनात्मक घटक है — हम बस परमेश्वर के स्वरूप में हैं। लेकिन एक कार्यात्मक घटक भी है, कि हम परमेश्वर की महिमा को उस विशेष तरीके में दिखाते और प्रदर्शित करते हैं जो हमारे लिए उतना ही सही है, जितना कि हम उस कार्य के माध्यम से जिसे हम करते हैं उसकी महिमा को धारण करते और प्रतिबिंबित करते हैं। और इसलिए जब हम सांस्कृतिक अध्यादेश के बारे में सोचते हैं, तो हमारे पास पृथ्वी को भरने, और उसे वश में करने, संसार को अदन के समान बनाने, वाटिका के समान, और इत्यादि जैसे, लेकिन साथ में इसे भरने के लिए, इसे आबाद करने का भी काम है। और इसलिए विचार यह है, कि मानवीय रूप में, उसके दिव्य स्वरूप में विशिष्ट रूप से प्रदर्शित परमेश्वर की महिमा को स्वयं उसकी महिमा के लिए, पृथ्वी की छोर तक फैलाने हेतु हमें सांस्कृतिक अध्यादेश का पालन करना है।
>
> — डॉ. ब्रूस बॉगस

अब जबकि हमने संस्कृति के महत्व के बाइबल वाले आधारों को देख लिया है, तो आइए दूसरे मुद्दे पर विचार करें: पूरे इतिहास भर में मनुष्यों द्वारा अपनाए गए दो विरोधी सांस्कृतिक आदर्शों के बाइबल वाले आधार।

विरोधी आदर्श

जब हम संसार के विभिन्न हिस्सों की यात्रा करते हैं, तो स्वयं को यह याद दिलाने में हम सही हैं कि चीज़ों को अलग-अलग तरीकों से करने के लिए लोगों के पास बहुत उपाय हैं। हम सभी को सड़क पर एक ही दिशा में गाड़ी चलाने, एक ही भाषा बोलने, या एक ही तरह के कपड़े पहनने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी, उत्पत्ति के शुरूआती अध्याय यह स्पष्ट करते हैं कि संस्कृति कभी भी नैतिक रूप से तटस्थ नहीं होती है। इसके विपरीत, किसी न किसी तरीके से, प्रत्येक संस्कृति का हर एक विकास, जब यह दो विरोधी सांस्कृतिक आदर्शों में से एक को प्रतिबिंबित करता है, तो, या तो परमेश्वर को क्रोधित करता है या प्रसन्न करता है ।

बाइबल के लेखक इस बात से अच्छी तरह से परिचित थे कि मनुष्यों ने कई तरीकों में संस्कृति का विकास किया। लेकिन उनके दृष्टिकोण से, सभी संस्कृतियां दो मूलभूत श्रेणियों में से एक में आती हैं: ऐसे सांस्कृतिक पैटर्न जिन्होंने परमेश्वर की सेवा की और दूसरे ऐसे सांस्कृतिक पैटर्न जिन्होंने उसका विरोध किया।

जैसा कि हम बाद में देखेंगे, जब हम बाइबल को आज लागू करते हैं, तो ये सांस्कृतिक अंतर बहुत महत्वपूर्ण बन जाते हैं। लेकिन अभी के लिए, आइए इस बात पर विचार करें कि यह विभाजन पहली बार बाइबल के शुरुआती अध्यायों में कैसे स्थापित किया गया था।

उत्पत्ति 3 में, भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को खाकर आदम और हव्वा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता की अपनी परीक्षा में विफल हो गए। इसके बाद, परमेश्वर ने खुलासा किया कि पाप में उनका पतन मनुष्यों को दो अलग सांस्कृतिक मार्गों पर ले जाएगा। उस तरीके को सुनिए जिसमें परमेश्वर ने उत्पत्ति 3:15 में इन दो सांस्कृतिक गतिविधियों का वर्णन किया जब उसने सर्प से कहा:

> **मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा और तू उसकी एड़ी को डसेगा (उत्पत्ति 3:15)।**

संक्षेप में, यहाँ वर्णित “स्त्री” हव्वा है, पहली स्त्री जिसे परमेश्वर ने बनाया था, और सर्प शैतान है।

यह अनुच्छेद उस विभाजन को स्थापित करता है जिसने पूरे इतिहास में मानव संस्कृति को चित्रित किया है। स्त्री के वंश ने विश्वासयोग्यता से परमेश्वर की सेवा करने का चुनाव किया है। और सर्प के वंश ने उसका विरोध करने का चुनाव किया है। और यह विभाजन तब तक मानव संस्कृति को चित्रित करना जारी रखेगा, जब तक कि मसीह, जो हव्वा का महान वंश है, शैतान के ऊपर अपनी अंतिम निर्णायक जीत को पूरा करने के लिए नहीं लौटता है।

ये दोनों मार्ग उत्पत्ति 4 में कैन और हाबिल की कहानी में तुरंत दिखाई देते हैं। अध्याय 4 के लगभग अंत में, हम देखते हैं कि कैसे कैन और उसके वंशजों ने सर्प के वंश के रूप में जीवन जीया। उन्होंने अत्यधिक परिष्कृत संस्कृतियों का गठन किया, लेकिन ऐसा परमेश्वर की इच्छा का विरोध करने और अपने आत्मिक पिता के रूप में दुष्ट जन के लिए अपनी प्राकृतिक वंशावली को बदलने के इरादे से किया।

लेकिन उत्पत्ति 5 में, हम स्त्री के वंश के रूप में शेत के वंशजों का रिकॉर्ड पाते हैं। उन्होंने परिवारों एवं जातियों का गठन किया। उन्होंने धार्मिक प्रथाओं और भाषा का विकास किया। वे सिद्ध नहीं थे, लेकिन उन्होंने परमेश्वर की सेवा और महिमा करने वाले सांस्कृतिक प्रतिमानों को स्थापित करने की पूरी कोशिश की। इस बिन्दु से आगे, पवित्र शास्त्र इन दो विरोधी सांस्कृतिक आदर्शों में अंतर करना जारी रखता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अब, हमें यहाँ सावधान रहना होगा। पवित्र शास्त्र की व्याख्या और लागू करने के लिए, हमें यह भी देखना होगा कि मानव संस्कृति के इन दो मार्गों के बीच कई समानताएं थीं। उत्पत्ति 4 और 5 संकेत देते हैं कि कैन और हाबिल दोनों ने प्रकृति को वश में करने की कोशिश की। उन दोनों ने समाजों और धार्मिक प्रथाओं को विकसित किया। और, जैसा कि शेत और कैन की वंशावलियां दिखाती हैं, दोनों के वंशजों ने विवाह किया और उनके बच्चे हुए।

संस्कृति के एक जैसे भावों को विकसित करना, अलग-अलग सांस्कृतिक आदर्शों का पालन करने वाले लोगों के लिए कैसे संभव था। बाकी के पवित्र शास्त्र से हमें पता चलता है कि ये समानताएं दो कारणों से प्रकट हुईं।

एक ओर, परमेश्वर का सार्वजनिक अनुग्रह, मानवता के प्रति उसकी सामान्य उद्धार न देने वाली दया, शैतान को रोकती है और जो लोग उसका अनुसरण करते हैं, उनके पापी प्रवृत्ति को रोकती है। और परिणामस्वरूप, यहाँ तक कि संसार में सबसे अधिक शैतानी संस्कृतियों ने भी परमेश्वर की इच्छा के लिए एक हद तक अनुरूपता को दिखाया है। दूसरी ओर, पाप उन लोगों को भ्रष्ट करना जारी रखता है जो परमेश्वर के मार्गों का अनुसरण करते हैं। इसलिए, संसार की सबसे पवित्र संस्कृतियां भी परमेश्वर की इच्छा का पूरी तरह से पालन करने में विफल रही हैं।

कैन और हाबिल के समय से हमारे अपने दिनों तक, परमेश्वर के विश्वासपात्र सेवकों और उन लोगों के सांस्कृतिक प्रयासों के बीच जिन्होंने उसके खिलाफ विद्रोह किया है, हमेशा से भिन्नताएं और समानताएं रहे हैं। और जब हम आज पवित्र शास्त्र के किसी अनुच्छेद को लागू करने की कोशिश करते हैं, तो इन सांस्कृतिक भिन्नताओं को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है।

संस्कृति के महत्व के बाइबल वाले आधारों, और दो सांस्कृतिक आदर्शों की स्थापना का पता लगाने के बाद, हम अब तीसरे कारक को देख सकते हैं: पवित्र शास्त्र के शुरूआती अध्यायों में सांस्कृतिक विविधता के लिए परमेश्वर की स्वीकृति।

विविधता

उत्पत्ति के पहले अध्याय मुख्य रूप से कुछ ही मनुष्यों के बारे में बात करते हैं। इसलिए, बाइबल के इस भाग में सांस्कृतिक विविधता दिखाने वाले समुदायों का कोई उदाहरण नहीं है। फिर भी, परमेश्वर ने उत्पत्ति के पहले अध्यायों में सांस्कृतिक विविधता के लिए मंच को उन तरीकों में सजाया, जिनमें उसने शुरूआती मानव इतिहास में व्यक्तिगत लोगों के लिए अपनी इच्छा का खुलासा किया।

सांस्कृतिक विविधता के आधारों का वर्णन करने के कई तरीके हैं, लेकिन समय की कमी के कारण हम इस बात पर विचार करेंगे कि “विशेष प्रकाशन” के माध्यम से सांस्कृतिक विविधता कैसे विकसित हुए और हम किसे आमतौर पर “सामान्य प्रकाशन” कहते हैं।

“विशेष प्रकाशन” वह शब्द है जिसका उपयोग पारंपरिक धर्मविज्ञानी स्वप्नों, दर्शनों, भविष्यद्वक्ताओं, पवित्र शास्त्र, और अन्य ऐसे ही माध्यमों के द्वारा, कुछ चुनिंदा लोगों के लिए परमेश्वर द्वारा स्वयं के और अपनी इच्छा के खुलासे को सूचित करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति के शुरूआती अध्यायों में, परमेश्वर ने मौखिक रूप से स्वयं को आदम और हव्वा, कैन और हाबिल, और नूह के लिए प्रकट किया।

दूसरी ओर, “सामान्य प्रकाशन” संपूर्ण सृष्टि में, दोनों लोगों में — मानवीय व्यक्तित्व, शारीरिक और आत्मिक योग्यताओं और अन्य गुणों में — और परिस्थितियों में — बाहरी दिखाई देने वाले संसार में, परमेश्वर द्वारा स्वयं के और उसकी इच्छा के खुलासे को संदर्भित करता है। हम इसे भजन 19 और रोमियों 1:18-20 जैसे अनुच्छेदों में देखते हैं।

परमेश्वर विशेष और सामान्य प्रकाशन का उपयोग हमें यह समझने में मदद करता है, कि परमेश्वर ने अपने लोगों के बीच सांस्कृतिक विविधता के लिए मंच को कैसे सजाया।

हम इसे उस तरीके में देखते हैं जिसमें परमेश्वर के विश्वासपात्र लोगों ने एक ही समय पर, अलग-अलग तरीकों से एक ही विशेष प्रकाशन का पालन किया, क्योंकि वे विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने वाले अलग-अलग लोग थे। उदाहरण के लिए, आदम और हव्वा ने उत्पत्ति 1:28 में सांस्कृतिक अध्यादेश का विशेष प्रकाशन प्राप्त किया। लेकिन आदम और हव्वा के पास अलग-अलग प्रतिभाएं, व्यक्तित्व, शारीरिक योग्यताएं और इत्यादि थे। उन्होंने विभिन्न व्यक्तिगत परिस्थितियों से निपटारा भी किया। ये विविधताएं उनके बीच जिस भी मात्रा में दिखाई दीं, आदम और हव्वा को एक ही समय पर विभिन्न तरीकों में अपने जीवनों के लिए सांस्कृतिक अध्यादेश के विशेष प्रकाशन को लागू करना था।

इसके अलावा, इसमें शामिल लोगों और परिस्थितियों में जारी रहने वाले बदलाव के कारण, मानवता ने अक्सर समय के साथ कई तरीकों में इसी विशेष प्रकाशन को लागू किया। सिर्फ एक उदाहरण के रूप में, जब परमेश्वर ने पहली बार सांस्कृतिक अध्यादेश दिया, तो पाप संसार में नहीं आया था। लेकिन जब आदम और हव्वा ने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह किया, तो वे और उनकी परिस्थितियाँ बदल गईं, और परिणामस्वरूप, जिस तरह से उन्होंने सांस्कृतिक अध्यादेश का पालन किया वह भी बदल गया। वास्तव में, उत्पत्ति 3 में विशेष प्रकाशन उजागर करता है कि जब समय और मानवता आगे बढ़ेगी, तो कैसे दर्द और व्यर्थता सांस्कृतिक अध्यादेश की पूर्ति को जटिल बनाएगी।

हम देख सकते हैं कि समय के साथ जब परमेश्वर एक विशेष प्रकाशन के बाद दूसरा जोड़ता है, तो एक ही प्रकार की विविधता बार-बार दिखाई देती है। कुछ हद तक, हर नए विशेष प्रकाशन ने पहले के विशेष प्रकाशनों के दायित्वों को संशोधित किया। इस तरह, हर बार जब परमेश्वर ने विशेष प्रकाशन दिए, तो उसके विश्वासपात्र लोगों को उसी समय और आगे के समय दोनों में, जिस तरह से वे उसकी सेवा करते थे उसमें बदलाव करके प्रत्युत्तर देना पड़ा।

एकदम शुरूआत से ही, विशेष और सामान्य प्रकाशनों ने उन सब प्रकार की विविधताओं को जन्म दिया जिनमें आरंभिक मनुष्यों को परमेश्वर की सेवा करनी थी। और जैसा कि हम इस अध्याय में बाद में देखेंगे, इस शुरूआती विविधता ने पूरे बाइबल के इतिहास भर और आज भी परमेश्वर के विश्वासपात्र लोगों के समुदायों के लिए सांस्कृतिक विविधता की बुनियाद रखी।

> उत्पत्ति में सांस्कृतिक अध्यादेश हमसे अपेक्षा करता है कि हम फले-फूलें और बढ़ जाए, पृथ्वी को भर दें और उस पर अधिकार कर लें। यह सांस्कृतिक विविधता को जन्म देने वाला है। और यह प्रश्न उठ सकता है, कि क्या यह वास्तव में परमेश्वर के डिजाइन का हिस्सा है? क्या परमेश्वर ने विभिन्न संस्कृतियों के बीच विविधता होने का इरादा किया है? और मैं कहूंगा हाँ, पवित्र शास्त्र की शिक्षा बिल्कुल यही है। यह उस बात का परिणाम कार्य है, जिसे करने की शुरूआत करने के लिए परमेश्वर हमें बुलाता है ... उसने हमें एक ऐसे वातावरण में रचा जो विविधता के लिए उसकी इच्छा के माध्यम ने निकला है: वहाँ सिर्फ सूखी भूमि ही नहीं है, वहाँ समुद्र भी है। वहाँ सिर्फ सूर्य ही नहीं है, वहाँ अन्य प्रकार के सितारे भी हैं। वहाँ सिर्फ पक्षी ही नहीं हैं, वहाँ सभी प्रकारों के पशु भी हैं। और वहाँ सिर्फ एक प्रकार के मनुष्य ही नहीं, बल्कि वहाँ पुरुष और स्त्री भी हैं। इसलिए जब हम उस परमेश्वर के स्वरूप को बढ़ाते हैं जिसने अपनी सारी सृष्टि में इस तरह से रचना की है, तो निश्चित रूप से हमें उस प्रकार की विविधता को प्रतिबिंबित करना चाहिए, जो विभिन्न सांस्कृतिक प्रथाओं और चीज़ों में प्रदर्शित होने जा रहा है। देखिए, मैं सोचता हूँ कि दूसरी बात जो हम कहेंगे, कि परमेश्वर अपनी महिमा से पूरी पृथ्वी भर को भरने की हमें आज्ञा देता है, और जब हम ऐसा

> करते हैं, तो हमें जलवायु की विविधता, भूमि की विविधता दिखाई देना शुरू होगी। आप भूमध्य रेखा पर अच्छी तरह से इग्लू का निर्माण नहीं कर सकते हैं, और अलास्का में घास की झोपड़ियाँ किसी काम की नहीं होंगी। इसलिए, जब हम पूरी पृथ्वी को भरते हैं और पूरी पृथ्वी के ऊपर अधिकार जमाते हैं, तो स्वाभाविक रूप से इस प्रकार की विविधता प्रतिबिंबित होगी, जिसे हम देखते हैं और जिसे प्रकाशितवाक्य कहता है कि छुटकारा पाए लोगों की मण्डली में हर जाति और भाषा और बोली और राष्ट्रों से लोग होंगे। यह शुरूआत से परमेश्वर के इरादे से विचलन नहीं है। यह वास्तव में उत्पत्ति 1 में परमेश्वर ने जो आज्ञा दी उसकी पूर्ति है।
>
> — डॉ. जिम्मी ऐगन

> मैं सोचता हूँ कि संसार में परमेश्वर की कार्यशैली की सुंदरता का एक हिस्सा ये भी है कि वह सिर्फ एक संस्कृति में ही नहीं बल्कि अनेक संस्कृतियों में और उनके माध्यम से कार्य कर रहा है। और मुझे लगता है कि बाइबल में इस बात की बहुत अधिक पुष्टि कि गई है। सुसमाचार की उद्घोषणा सभी राष्ट्रों, अर्थात, सभी जातियताओं, संसार के लोगों के सभी समूहों के लिए है। और जब आप प्रकाशितवाक्य के अंत में पहुँचते हैं, तो पवित्र शास्त्र पृथ्वी के राजाओं के बारे में बात करता है जो अपने वैभव को परमेश्वर के राज्य में ला रहे हैं; विभिन्न संस्कृतियों की ये सभी अनमोल वस्तुएं और अद्वितीय शक्तियाँ और उपहार जिन्हें हम संसार की विभिन्न संस्कृतियों में देखते हैं, ये सभी ऐसी वस्तुएं हैं जिनका उपयोग परमेश्वर छुटकारे वाली रीति में करता है, जो मानवता के लिए उसके उद्देश्यों का हिस्सा हैं। और यह उन कारणों में से एक है जिनमें मैं सोचता हूँ कि मसीह की देह में संस्कृतियों के बीच संबंधों का होना हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है, ताकि हम संसार की विभिन्न संस्कृतियों के माध्यम से परमेश्वर के कार्य के संपूर्ण धन से लाभान्वित हो सकें।
>
> — डॉ. फिलिप्प रायकेन

बाइबल की संस्कृति और आधुनिक अनुप्रयोग के लिए इसके संबंध का पता लगाने के लिए, हमें न सिर्फ संस्कृति के बाइबल वाले आधारों को, बल्कि पुराने और नए नियमों के दौरान संस्कृति के बाइबल वाले विकासों को भी ध्यान में रखने की आवश्यकता है।

विकास

बाइबल के अंतर्गत सांस्कृतिक विकासों को सारांशित करने के कई तरीके देखने को मिलते हैं, लेकिन हमारे उद्देश्यों के लिए, हम इन सांस्कृतिक विकासों को उसी मापदंड से देखेंगे, जिसका उपयोग हमने संस्कृति के आधारों की जाँच करने के लिए किया था। हम सबसे पहले संस्कृति के महत्व को देखेंगे जब बाइबल का इतिहास विकसित हुआ। फिर, हम देखेंगे कि बाइबल में दो विरोधी सांस्कृतिक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आदर्श कैसे विकसित हुए। अंत में, हम जाँच करेंगे कि पवित्र शास्त्र में सांस्कृतिक विविधता कैसे विकसित हुई। आइए संस्कृति के महत्व के साथ शुरू करें।

महत्व

पुराने एवं नए नियमों दोनों ही में संस्कृति महत्वपूर्ण है, लेकिन पुराने नियम में सांस्कृतिक महत्व ज्यादा स्पष्ट रूप से उभर के आता है क्योंकि हम देखते है पुराना नियम आरंभिक पवित्र शास्त्र में बहुत अधिक ध्यान इस्राएल पर एक राष्ट्र के रूप में देता है।

उत्पत्ति की पुस्तक इस्राएल के राष्ट्र बनने से पहले के सांस्कृतिक विकास का वर्णन करती है, लेकिन संपूर्ण पेन्टाटचूक अर्थात बाइबल की पहली पाँच पुस्तक — मूसा की व्यवस्था वाली वाचा के युग के दौरान लिखा गया था, जब इस्राएल ने मिस्र को छोड़ा और उसे सीने पर्वत पर एक राष्ट्र के रूप में इकट्ठा किया गया था। इस कारण से, ये पुस्तकें इस्राएल के राष्ट्रीय जीवन के लिए परमेश्वर की आज्ञाओं और निर्देशों पर बहुत अधिक ध्यान-केंद्रित करती हैं।

यहोशू से मलाकी तक, बाकी के पुराने नियम को, दाऊद वाली शाही वाचा के युग के दौरान लिखा गया था, जब इस्राएल पहले ही पूरी तरह से एक विकसित राष्ट्र बन चुका था। ये पुस्तकें परमेश्वर के उन प्रकाशनों के स्पेक्ट्रम को संबोधित करते हैं, जिन्होंने इस्राएल की संस्कृति को उसके शाही गौरव के उदय, विभाजित राज्य के उतार-चढ़ाव, बंधुआई, और पुराने नियम के अंत में पुनर्स्थापना के संक्षिप्त काल के दौरान निर्देशित किया।

हालाँकि पुराना नियम उन कई सांस्कृतिक विकासों का वर्णन करता है जो इस्राएल में हुए, लेकिन पवित्र शास्त्र में सबसे बड़ा सांस्कृतिक विकास पुराने नियम से मसीह में नई वाचा के युग के बदलाव में हुआ। इस्राएल की राष्ट्रीय संस्कृति पर ध्यान-केंद्रित करने की बजाय, नया नियम मसीही कलीसिया में सांस्कृतिक पैटर्न के विकासों की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

यह समझने के लिए कि यह नाटकीय बदलाव कैसे हुआ, हमें यह याद रखने की आवश्यकता है कि पहली सदी में फिलिस्तीन में अधिकांश यहूदी लोगों ने नई वाचा के युग के आने की अपेक्षा की। जैसा कि हमने पहले के अध्याय में सीखा, दोनों नियमों के बीच की अवधि के दौरान यहूदी रब्बी लोगों ने मसीहा के आने से पहले के संपूर्ण इतिहास को “इस युग” के रूप में संदर्भित किया। और उन्होंने सिखाया कि जब मसीहा प्रकट होगा, तो वह “आने वाले युग” को लाएगा। उनका मानना था कि आने वाले युग में, मसीहा प्रकट होगा, संसार के दुष्ट राष्ट्रों के खिलाफ लड़ाई में अपने लोगों का नेतृत्व करेगा, और नाटकीय एवं निर्णायक रूप से इस्राएल की संस्कृति को बदलते हुए, तेजी से अपने लोगों को गौरवशाली, संसार भर के राज्य में स्थापित करेगा।

लेकिन यीशु और उसके प्रेरितों ने यह स्पष्ट किया कि उसका राज्य तीन चरणों में प्रकट होगा: उसके पहले आगमन में उसके राज्य का उद्घाटन, पूरे कलीसियाई इतिहास में उसके राज्य की निरंतरता और उसके दूसरे आगमन के समय उसके राज्य की संपूर्णता। इस तीन-चरण वाले दृष्टिकोण ने उन तरीकों के लिए एक पूरी नई समझ पैदा की, जिनमें परमेश्वर ने नई वाचा की अवधि के दौरान अपने लोगों की संस्कृति के विकसित होने की अपेक्षा की थी।

नए नियम में जब तक हम मसीह के राज्य के अंतिम लक्ष्य को ध्यान में नहीं रखते हैं तो संस्कृति के महत्व को खो देना बहुत आसान है, जैसा कि प्रकाशितवाक्य 11:15 जैसे अनुच्छेदों में वर्णित है:

> **जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा (प्रकाशितवाक्य 11:15)।**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस अनुच्छेद में, हम देखते हैं कि मसीह एक दिन इसके कई विद्रोही संस्कृतियों के साथ "संसार के राज्य" को नष्ट कर देगा। लेकिन वह इन दुष्ट संस्कृतियों को सिर्फ नष्ट ही नहीं करेगा। वह संसार को एक विश्वव्यापी संस्कृति में बदल देगा, जिसे "हमारे प्रभु के और उसके मसीह के राज्य" के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जहाँ "वह युगानुयुग राज्य करेगा।"

इसलिए, नए नियम में नजर आने वाली संस्कृति मामूली बात होने की बजाय, इतनी महत्वपूर्ण है कि पवित्र शास्त्र के इस हिस्से का हर भाग कुछ तरीकों में इस बात से संबंधित है कि मानव संस्कृति के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों की पूर्ति को मसीह कैसे लाता है।

कुछ अनुच्छेद उन तरीकों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिनमें यीशु ने अपने जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और आत्मा के उँडेले जाने के द्वारा सांस्कृतिक अध्यादेश के अंतिम चरण को गति दी है। नए नियम के दूसरे भाग कलीसिया के मार्गदर्शन पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जब वह मसीह के राज्य की निरंतरता के दौरान सुसमाचार के माध्यम से संसार को बदलने में मदद करती है। और फिर अन्य अनुच्छेद संपूर्णता पर ध्यान आकर्षित करते हैं, जब मसीह मानवता के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए वापस आएगा और ऐसी संस्कृति की स्थापना करेगा, जिसमें परमेश्वर की इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो जाती है जैसे वह स्वर्ग में है।

अब जबकि हमने बाइबल के इतिहास के विकास में संस्कृति के महत्व को देखने के द्वारा बाइबल के विकासों का पता लगा लिया है, हम पूरे बाइबल में पाए जाने वाले दो विरोधी सांस्कृतिक आदर्शों के विकासों की तरफ बढ़ सकते हैं।

विरोधी आदर्श

उत्पत्ति 3 में, दो सांस्कृतिक आदर्शों के स्थापना ने सर्प के वंश के साथ अन्यजाति राष्ट्रों को और हव्वा के वंश के साथ इस्राएल को जोड़ने के लिए पुराने नियम के लेखकों का मार्गदर्शन किया।

अन्यजाति राष्ट्रों ने अपने संस्कृतियों को झूठे देवताओं की सेवा के लिए विकसित किया और इस्राएल के परमेश्वर का विरोध किया। उन्होंने इन झूठे देवताओं के लिए पूजा-स्थलों और मंदिरों की स्थापना की और कभी-कभी अपने बच्चों की भी बलि दी। परमेश्वर ने यह एकदम स्पष्ट किया कि उसके लोगों का इन प्रथाओं से कुछ भी लेना-देना नहीं होगा।

दूसरी ओर, इस्राएल ने मूसा के माध्यम से दी गई धर्मी व्यवस्थाओं को अपनाया, और उन तरीकों से जीवन जीने का प्रयास किया, जिससे एक सच्चे परमेश्वर की महिमा की महिमा हो। उन्होंने सब्त का पालन किया, मूर्ति-पूजा से परहेज किया, और मानव ज्ञान एवं शक्ति के बजाय परमेश्वर के मार्गदर्शन और सुरक्षा पर भरोसा किया।

निश्चित रूप से, इसका अर्थ यह नहीं था कि परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा का वचन देने के द्वारा अन्यजातियों को इस्राएल के देश में नहीं अपनाया जा सकता है, या यह कि इस्राएली इतने भ्रष्ट नहीं हो सकते हैं कि वे परमेश्वर के शत्रु बन जाएं। लेकिन इस हद तक कि प्रत्येक ने अपने प्रथागत आदर्शों का पालन किया, इस्राएल ने परमेश्वर की सेवा में अपनी संस्कृति का विकास किया, और अन्यजाति राष्ट्रों ने झूठे देवताओं की सेवा में अपनी संस्कृतियों का विकास किया।

अब, इसी समय पर, पुराना नियम और पुरातत्व यह भी इंगित करते हैं कि इस्राएली और अन्यजाति संस्कृतियां कई मायनों में समान थीं। इनमें से कुछ समानताएं इस्राएलियों द्वारा अपने पड़ोसियों के पापमय मार्गों का अनुसरण करने से पैदा हुईं। लेकिन अन्य समानताएं अन्यजातियों की पापमय प्रवृति को रोकने वाले परमेश्वर के सार्वजनिक अनुग्रह से पैदा हुईं, जिसके कारण उनकी संस्कृतियों के कुछ पहलू कम से कम सतही स्तर से परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप थे। ये सांस्कृतिक विभाजन संपूर्ण पुराने नियम के दौरान जारी रहे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जब हम नए नियम में आते हैं, तो ये दो विरोधी सांस्कृतिक आदर्श फिर प्रकट होते हैं, लेकिन अलग गठबंधन के साथ।

पुराने नियम में शुरू हुए इस्राएल के लंबे समय के विश्वासघात ने, मसीह के देहधारण के समय तक सिर्फ कुछ ही निष्ठावान यहूदियों को छोड़ा। और नए नियम में, अन्यजाति लोग अब इस शेष बचे लोगों के साथ परमेश्वर के लोगों के रूप में पूर्ण लेपालकपन प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए, यहूदियों और अन्यजाति राष्ट्रों के बीच विभाजन करने के बजाय, नए नियम के लेखकों ने स्त्री के वंश के रूप में मसीह के अनुयायियों को और सर्प के वंश के रूप में अविश्वासियों को जोड़ा, चाहे वे यहूदी थे या अन्यजाति।

यही कारण है कि यीशु ने यूहन्ना 8:44 में शैतान को फरीसियों के पिता के रूप में बताया। यह, यह भी बताता है कि क्यों, रोमियों 16:20 में, पौलुस ने उत्पत्ति 3:15 का हवाला दिया, जब उसने रोम में मसीहों को आश्वासन दिया कि परमेश्वर शैतान को उनके पैरों के नीचे कुचल देगा।

> इस्राएल और अन्यजाति राष्ट्रों के बीच संबंध एक दिलचस्प प्रश्न है ... और यदि आप उत्पत्ति 18 और अन्य स्थानों में पर देखें, तो परमेश्वर अब्राहम से एक प्रतिज्ञा करता है कि वह अब्राहम को आशीषित करेगा और उसके वंशजों को आशीष देगा। और यदि हम पवित्र शास्त्र को एक बहु-अभिनय नाटक मानते हैं, तो आपके पास पहला अभिनय है जहाँ परमेश्वर अब्राहम से प्रतिज्ञा कर रहा है, और वह इस्राएल देश को संरक्षित रखता है, उसे आसपास के राष्ट्रों के भ्रष्ट प्रभावों से बचाए रखता है; वे विफल हो जाते हैं, लेकिन वह उन्हें अनुशासित करता है। वह राष्ट्र की रक्षा करता है जब तक कि मसीहा नहीं जाता है। मसीहा आता है और इस्राएल के लिए उद्धार की उद्घोषणा करता है। यदि आप मत्ती के सुसमाचार में देखें, यीशु मत्ती 15 में कहता है, "मैं इस्राएल की खोई भेड़ के लिए आया।" वह कनानी महिला उससे अपनी बेटी के लिए निवेदन कर रही है। और यह कभी-कभी परेशान करने वाला है। लोग कहते हैं, "ठीक है, वह उसकी बेटी को तुरंत ठीक क्यों नहीं कर रहा है?" और यीशु कुछ मायनों में कह रहे हैं, "यह काम द्वितीय है।" ठीक? "मैं इस्राएल की खोई हुई भेड़ों के लिए उद्धार की उद्घोषणा करने आया हूँ।" लेकिन फिर आप सुसमाचार के अंत में पहुँचते हैं, मत्ती 28, और हम वह वो पढ़ते है जिसे हम तीसरा कार्य कह सकते है वह काम जिसमें हम शामिल हैं, जहाँ सुसमाचार समान रूप से यहूदियों और अन्य जातियों के लिए, सभी राष्ट्रों के लिए आगे बढ़ता है। अब, रोमियों 1 में यह दिलचस्प है, यहाँ पौलुस कार्य के तीसरे भाग में भी इस अंतर को बनाए रखता है। वह इस बारे में बोलता है, "पहले यहूदियों के लिए, फिर अन्यजाति के लिए।" वह अपने देशवासियों के प्रति दायित्व को महसूस करता है, उनके प्रति जिनके पास अब्राहम की प्रतिज्ञाएं हैं: मेरा दायित्व है कि पहले मैं उनके लिए घोषणा करूं। इसलिए वह आराधनालय में जाता है और घोषणा करता है कि हमारे पूर्वजों को दी गई प्रतिज्ञाएं सच्ची हैं। लेकिन जब उसे आराधनालय से बाहर निकाल दिया गया या जब वे और यह लगने लगा कि वे ज्यादा उसकी बात नहीं सुनेंगे, तो वह तुरंत अन्यजातियों के पास चला जाता है। क्योंकि, जैसा कि वह इफिसियों 2 में वर्णन करता है, कि क्रूस पर मसीह की मृत्यु के माध्यम से, यहूदी और अन्यजाति के बीच अलग करनेवाली दीवार को ढा दिया गया है ... परमेश्वर के लेपालक पुत्रों और पुत्रियों के रूप में एक साथ यहूदी और अन्यजाति के रूप में अब हमारे पास एक सुंदर एकता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

— डॉ. रॉबर्ट एल. प्लम्मर

नया नियम अक्सर विश्वासियों को इस संसार के सदृश्य न बनने की चेतावनी देता है क्योंकि कलीसिया और संसार आपस में विरोधी आदर्शों का अनुसरण करते हैं। लेकिन इसी समय, नए नियम के लेखकों ने स्वीकार किया कि कलीसिया और संसार के बीच रेखा निरपेक्ष नहीं थी। बाइबल में जैसे-जैसे संस्कृति ने विकास किया, तो आरंभिक मसीहों ने अक्सर उन रीति-रिवाज़ों और दार्शनिक दृष्टिकोणों का अनुमोदन किया जिनका अनुसरण अविश्वासियों ने किया। और जैसा कि हमने पहले सीखा, इनमें से कुछ समानताएं मसीह के अनुयायियों पर पाप के प्रभाव से पैदा हुईं, और अन्य समानताएं संसार पर सार्वजनिक अनुग्रह के सकारात्मक प्रभावों से उपजी हैं।

बाइबिल के सांस्कृतिक विकास पर हमारे ध्यान में हमने पुराने और नए नियमों में संस्कृति के महत्व को देखा, और यह कि कैसे पूरे बाइबल के इतिहास में विरोधी सांस्कृतिक आदर्श विकसित हुए। आइए, अब अपने तीसरे विषय पर ध्यान दें: पवित्र शास्त्र में सांस्कृतिक विविधता का विकास।

विविधता

जब हम पुराने नियम को खोजते हैं, तो यह स्पष्ट है कि इसमें कई व्यवस्थाएं और निर्देश शामिल हैं जो कि इस्राएल की राष्ट्रीय संस्कृति को मजबूत बनाने के लिए तैयार किए गए थे। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं था, कि परमेश्वर इस्राएल की सभी संस्कृतियों से, एकदम एक समान होने की उम्मीद करता था। वास्तव में, जब इस्राएल के भीतर विभिन्न समुदायों ने विश्वासयोग्यता से परमेश्वर के विशेष और सामान्य प्रकाशनों को लागू किया, तो विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक पैटर्न उभर कर आए।

इनमें से कई विविधताएं एक साथ हुईं। लेवी याजकों ने परमेश्वर की व्यवस्था को अपने समुदायों में विशेष तरीकों से लागू किया, जबकि इसी समय पर राजाओं और अन्य राजनैतिक अगुवों ने परमेश्वर की व्यवस्था को अलग रीति से लागू किया। एक परिवार ने परमेश्वर की व्यवस्था को उन तरीकों में लागू किया जो उसके सदस्यों के लिए उपयुक्त थे, जबकि अन्य परिवारों ने परमेश्वर की व्यवस्था को उन तरीकों में लागू किया जो उनके सदस्यों के लिए उपयुक्त थे।

इससे आगे, और भी अधिक विविधताएं हुईं, जब परमेश्वर ने समय के साथ इस्राएल के लिए और अधिक प्रकाशन दिए। परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए जब वे जंगल से होकर जा रहे थे, तो अलग सांस्कृतिक पैटर्न और कनान की जीत के दौरान अलग पैटर्न की आज्ञा दी। परमेश्वर ने तब परिवर्तन किए जब उसने इस्राएल में राजशाही की स्थापना की, और तब भी जब उसने सुलैमान को यरूशलेम में मंदिर बनाने की आज्ञा दी। इस्राएल की संस्कृति में अन्य विविधताएं बंधुआई के दौरान और बंधुआई के बाद हुए।

> इस्राएल के सांस्कृतिक जीवन के कुछ पहलू उनके पूरे इतिहास में बहुत अधिक नहीं बदले। वे शुरू से अंत तक एक पितृसत्तात्मक संस्कृति थे। परिवार में पति प्रमुख व्यक्ति था। लेकिन किसी भी तरह से एकमात्र व्यक्ति नहीं था। मुझे नीतिवचन की याद आती है, जो कहता है कि तू अपने पिता का बहुत सम्मान करना और अपनी माता को श्राप न देना। लेकिन फिर भी, संस्कृति शुरू से अंत तक काफी हद तक पितृसत्तात्मक थी। दूसरी ओर, उनका राजनीतिक जीवन अलग-थलग जातियों से और फिर अधिक दृढ़ संगठित जनजातीय संरचना में, और अंततः राष्ट्रीय स्थिति में नाटकीय रूप से बदला, और फिर राष्ट्र का नष्ट किया जाना, और उनका इस बड़े सांसारिक साम्राज्य के भीतर सिर्फ एक संस्कृति बन जाना और समझने की कोशिश करना, कि फिर हम परमेश्वर के लोगों के रूप

> में कौन हैं? इस तरह, उनके लिए राजनीतिक स्थिति उस समय की अवधि के दौरान काफी नाटकीय रूप में बदल गई।
>
> — डॉ. जॉन ओसवॉल्ट

जब हम नए नियम की ओर ध्यान देते हैं, तो हम फिर से विविधता को पाते हैं। पुराने नियम के सांस्कृतिक पैटर्न अभी भी लागू थे, लेकिन अब उन्हें इस तथ्य के प्रकाश में देखना था, कि परमेश्वर के लोग अब एक राष्ट्र नहीं थे। परमेश्वर के लोग अब एक कलीसिया थे, ऐसा समुदाय जिसे कई अलग-अलग राष्ट्रीय संस्कृतियों में रहने के लिए बुलाया गया था। इस तरह, जैसा कि आप अपेक्षा कर सकते हैं, नई वाचा के युग में परमेश्वर ने अपने विश्वासपात्र लोगों को इससे भी अधिक सांस्कृतिक विविधता विकसित करने के लिए प्रेरित किया।

लोगों एवं परिस्थितियों में अंतरों ने बाइबल की शिक्षाओं को एक-दूसरे से अलग तरीकों से लागू करने में मसीही समुदायों की अगवाई की। उदाहरण के लिए, यहूदी और अन्यजाति विश्वासियों ने स्वयं अपनी परिस्थितियों के आधार पर विशिष्ट सांस्कृतिक प्रथाओं का पालन किया। और विभिन्न क्षेत्रों में स्थित मसीही कलीसियाओं को जब उन्होंने बाइबल को लागू किया, तो उन्हें स्वयं अपने लोगों और परिस्थितियों पर विचार करना पड़ा। और विभिन्न पारिवारिक समूहों ने विविध तरीकों से परमेश्वर के वचनों का ईमानदारी से पालन किया।

लेकिन यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि नई वाचा का विशेष प्रकाशन अचानक से नहीं हुआ था। लगभग एक सदी के लिए, परमेश्वर ने मसीह के माध्यम से और मसीह के प्रेरितों एवं भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से कलीसिया के लिए अपनी इच्छा को उजागर किया। इस तरह, नए नियम में कलीसिया की संस्कृति भी समय के साथ बदलती रही। उदाहरण के लिए, खतने की प्रथा नाटकीय रूप से तब बदल गई जब प्रेरितों और प्राचीनों ने यरूशलेम में प्रेरितों के काम 15 में मुलाकात की। और हर बार जब नए नियम की कोई पुस्तक लिखी एवं प्राप्त की गई, तो कई मसीही कलीसियाएं परिवर्तन से होकर गुजरी। इन और कई अन्य कारणों से, नए नियम के समय में मसीही समुदायों के बीच बहुत अधिक मात्रा में सांस्कृतिक विविधता थी।

अब जबकि हमने संस्कृति के बाइबल वाले आधारों और जिस तरीके से बाइबल में, बाइबल के विकासों ने संस्कृति को प्रभावित किया उसकी जाँच के द्वारा बाइबल की संस्कृति और आधुनिक अनुप्रयोग को देख लिया है, तो आइए अपने तीसरे प्रमुख विषय को देखें। पवित्र शास्त्र का हमारे आधुनिक अनुप्रयोग के बारे में, इन सभी विचार-विमर्शों का क्या कहना है?

अनुप्रयोग

हमारे समय में, कई सुसमाचारीक लोग विश्वास को मुख्य रूप से एक निजी, व्यक्तिगत मामला मानते हैं। अब यह सुनिश्चित है, कि परमेश्वर के साथ हमारे व्यक्तिगत संबंध के बारे में पवित्र शास्त्र के पास कहने के लिए बहुत कुछ है। लेकिन हम में से कई लोग बाइबल के इस पहलू पर इतना अधिक जोर देते हैं कि आधुनिक संस्कृति के लिए पवित्र शास्त्र के निहितार्थ में हमारी बहुत कम रुचि होती है। लेकिन जैसा कि हम देखेंगे, पवित्र शास्त्र हमारे विश्वास के सांस्कृतिक आयामों पर इतना अधिक जोर देते हैं कि हमें आज पवित्र शास्त्र को संस्कृति के लिए लागू करने हेतु स्वयं को समर्पित करना चाहिए।

संस्कृति के बारे में जो बाइबल सिखाती है उसके आधुनिक अनुप्रयोग पर हम उसी तरीके से विचार करेंगे जिस तरीके से हमने पवित्र शास्त्र में संस्कृति के आधारों और विकासों को देखा। सबसे पहले, जब हम पवित्र शास्त्र को लागू करते हैं तो हम संस्कृति के महत्व का पता लगाएंगे। इसके बाद, हम देखेंगे कि कैसे दो विरोधी सांस्कृतिक आदर्शों को आज पवित्र शास्त्र के अनुप्रयोग को प्रभावित करना चाहिए। और अंत में, हम देखेंगे कि कैसे आधुनिक अनुप्रयोग को उस सांस्कृतिक विविधता को ध्यान में रखना चाहिए, जिसे परमेश्वर ने हमारे समय के लिए निर्धारित किया है। आइए आधुनिक अनुप्रयोग में संस्कृति के महत्व के साथ शुरू करें।

महत्व

पवित्र शास्त्र के कई अंश हमें यह समझने में मदद करते हैं कि आधुनिक संस्कृति के लिए बाइबल को लागू करना क्यों महत्वपूर्ण है। लेकिन इसे देखने के आसान तरीकों में से एक यह विचार करना है कि मसीह ने जो भी आज्ञा दी थी, उसकी पूरी श्रृंखला को सिखाने के द्वारा, उसने कैसे अपने अनुयायियों को संसार की हर संस्कृति को प्रभावित करने के लिए बुलाया था।

सुनिए कैसे यीशु ने इसे मत्ती 28:19-20 में कहा, वही सुपरिचित अनुच्छेद जिसे अक्सर महान आदेश या "सुसमाचार अध्यादेश" कहते हैं। इस अनुच्छेद में, यीशु ने अपने शिष्यों को बताया:

> **इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता, और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ (मत्ती 28:19-20)।**

यह अनुच्छेद मसीह के अनुयायियों के मिशन को सारांशित करता है जब तक कि वह महिमा में वापस नहीं आता है। लेकिन सराहना करने के लिए कि यह कैसे हमारे आधुनिक सांस्कृतिक प्रयासों से संबंधित है, तो यह देखने में मदद करता है कि कैसे यह सुसमाचार अध्यादेश उत्पत्ति की शुरूआत में मानव जाति को दिए गए सांस्कृतिक अध्यादेश को प्रतिबिंबित करता है। उत्पत्ति 1:28 के सांस्कृतिक अध्यादेश में, परमेश्वर ने मानवता से "फूलने-फलने और संख्या में बढ़ने" के लिए कहा।

इसी तरह से, मत्ती 28:19 में, मसीह ने अपने अनुयायियों को संख्या में बढ़ने की आज्ञा दी जब उसने कहा, "इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।" जिस तरह आदम और हव्वा को परमेश्वर के स्वरूपों से पृथ्वी को भरना था, उसी तरह से मसीहों को भी परमेश्वर के छुड़ाए गए स्वरूपों की संख्या को बढ़ाना है। और हम मसीह में उद्धार वाले विश्वास में लोगों को लाने के द्वारा आंशिक रूप से ऐसे करते हैं।

लेकिन यीशु के सुसमाचार का अध्यादेश सिर्फ परमेश्वर के विश्वासयोग्य सेवकों की संख्या में वृद्धि तक ही सीमित नहीं था। मत्ती 28:20 के अनुसार, हमारे मिशन में "उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ" भी शामिल है। जिस तरह आदम और हव्वा को पृथ्वी को भरने और वश में करने के द्वारा परमेश्वर की आज्ञा को मानने के लिए बुलाया गया था, उसी तरह से परमेश्वर की आज्ञा का अनुसरण करने के द्वारा मसीहों को सभी राष्ट्रों को परमेश्वर की आज्ञा पालन सिखाना है, और इसमें संस्कृति के लगभग हर पहलू पर निर्देश शामिल हैं।

हम इसे इस तरह देख सकते हैं: आदम और हव्वा को परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना था और पृथ्वी को वश में करके संस्कृति का निर्माण करना था, और हमें परमेश्वर की आज्ञा पालन करनी है और राष्ट्रों को अनुशासित करने के द्वारा संस्कृति का निर्माण करना है।

मत्ती 28 से यह स्पष्ट होना चाहिए कि विश्वासियों को बपतिस्मा देने और सभी राष्ट्रों को उसकी आज्ञाओं को सिखाने के द्वारा यीशु ने अपेक्षा की थी कि उसके अनुयायी हर संस्कृति पर प्रभाव डालेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसकी शिक्षाओं ने गरीबी, वित्त, स्वास्थ्य, विवाह, न्याय, जातीयता, राजनीति और यहाँ तक कि करों का भुगतान जैसे सार्वजनिक सांस्कृतिक मुद्दों को संबोधित किया। यही कारण है कि हम नए नियम की पुस्तकों को सांस्कृतिक मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला को संबोधित करता हुआ पाते हैं।

इन्ही पंक्तियों के समान, मत्ती 5:13-14 में, मसीह ने अपने शिष्यों का साहसपूर्वक वर्णन निम्न प्रकार से किया:

> **पृथ्वी के नमक ... [और] ... जगत की ज्योति (मत्ती 5:13-14)।**

जैसा कि इतिहास ने बार-बार दिखाया है, कि जब यीशु के अनुयायियों ने ईमानदारी से उन सब बातों को हर राष्ट्र को सिखाने के लिए स्वयं को समर्पित किया जिन्हें मसीह ने आज्ञा दी थी, तो हमारे पास पूरे संसार में संस्कृति के हर पहलू को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने की क्षमता है। और इस कारण से, बाइबल के हमारे आधुनिक अनुप्रयोग को मानव संस्कृति की पूरी श्रृंखला को संबोधित करना चाहिए।

> मत्ती 5 में, यीशु अपने शिष्यों से कहते हैं कि उन्हें पृथ्वी का नमक और जगत की ज्योति बनना है। और एक आधुनिक पाठक के लिए, यह एक तरह का रहस्यमय कथन है ... आप इस बारे में जरा सोचिए, प्राचीन श्रोताओं के लिए, विशेष रूप से सुसमाचार में संस्कृति में आधारित यह भाषा क्या कहती है? और नमक ऐसी वस्तु थी जो वस्तुओं को सड़ने से बचाती थी, इसलिए सड़ने से बचाने के लिए मांस या मछली में नमक को लगाया जाता था, उसे संरक्षित करने के लिए, और यह कुछ ऐसा था जिसने स्वाद को भी बढ़ाया। और आप मसीहों के बारे में सोचते हैं। संसार में उनका प्रभाव परमेश्वर के साधन के तहत कई तरीकों में संस्कृति को संरक्षित करना या परमेश्वर के सत्य की उपस्थिति से संस्कृति के स्वाद को बढ़ाने में, धार्मिकता की उपस्थिति होने के लिए है। और ज्योति भी इस बात को चित्रित करती है। पूरे पवित्र शास्त्र में ज्योति को प्रकट करने के रूप में, प्रकाशन के चित्र के रूप में देखा जाता है। और मसीहों को संसार में यह प्रकट करते हुए होना चाहिए कि परमेश्वर कौन है, अंधेरे संसार को उस सत्य और धार्मिकता के साथ रोशन करना, प्रसारण करना कि परमेश्वर कौन है।
>
> — डॉ. रॉबर्ट एल. प्लम्मर

आधुनिक अनुप्रयोग और बाइबल संस्कृति के हमारे अध्ययन में, हमने आज मसीह के अनुयायियों के लिए संस्कृति के महत्व को देखा है। अब आइए अपने दूसरे विषय को देखें। दो विरोधी सांस्कृतिक आदर्शों की उपस्थिति को बाइबल के हमारे आधुनिक अनुप्रयोग को कैसे प्रभावित करना चाहिए?

विरोधी आदर्श

जब मसीह पृथ्वी पर आया, तो उसने शैतान पर अपने महान विजय के अंतिम चरण का उद्घाटन किया। लेकिन यह विजय सिर्फ तब पूरा होगा जब मसीह सब वस्तुओं की संपूर्णता के समय महिमा में वापस लौटेगा। इस बीच, उसके राज्य की निरंतरता के दौरान, मानव जाति सर्प के वंश, यानी वह अविश्वासी संसार जो परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह के सांस्कृतिक आदर्श का पालन करता है, और हव्वा

के उस वंश, मसीह के अनुयायियों के बीच विभाजित होना जारी रखे हुए है, जो परमेश्वर की सेवा के सांस्कृतिक आदर्श का अनुसरण करते हैं।

लेकिन, जैसा कि यह बाइबल के समय में था, परमेश्वर के लोगों और संसार के बीच रेखा निरपेक्ष नहीं है। जब तक मसीह वापस नहीं आता है, तब तक पृथ्वी पर उसके लोग पाप के बचे हुए प्रभाव से संघर्ष करते रहेंगे। हम पाप के अत्याचार से मुक्त हैं, लेकिन इसके प्रभाव से मुक्त नहीं हैं। इसी समय, परमेश्वर का सार्वजनिक अनुग्रह अभी भी संसार को रोकता है जिससे अविश्वासी भी अक्सर ऐसे तरीकों से रहते हैं, जो कुछ हद तक, परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप होता है। और यह विशेष रूप से उन देशों के बारे में सच है जहाँ सुसमाचार का बहुत प्रभाव पड़ा है।

मसीह के अनुयायियों के रूप में, यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उन सांस्कृतिक मार्गों पर चलें जो परमेश्वर की इच्छा पर खरे हैं और जो नहीं हैं उनसे बचे। कभी-कभी जो मार्ग हम अपनाते हैं उन्हें संसार से बहुत अलग होना चाहिए। बाइबल के लेखकों ने बार-बार अपने मूल श्रोताओं को मूर्तिपूजा, यौन अनैतिकता, स्वार्थ, अन्याय एवं अन्य सांस्कृतिक बुराईयों में पड़ने के खिलाफ चेतावनी दी। जब कभी भी हम इस तरह की बुराईयों को अपने समय में देखते हैं, तो हमें उनसे मूँह मोड़ना है।

लेकिन अन्य समयों पर, बाइबल के लेखकों ने सामाजिक संबंधों, प्रौद्योगिकी, कला, संगीत, वास्तुकला, कानून और राजनीति के विभिन्न पहलूओं पर सार्वजनिक अनुग्रह के प्रभाव को पहचानने के लिए अपने मूल श्रोताओं को प्रोत्साहित किया। हर बार जब हम पाते हैं कि पवित्र शास्त्र अविश्वासियों के जीवन जीने के तरीकों की स्वीकृति देता है, तो आज संसार की संस्कृति पर परमेश्वर के सार्वजनिक अनुग्रह के वैसे प्रभावों की खोज हमें करनी चाहिए। जब तक हम पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं के प्रति सच्चे रहते हैं, तब तक हमें विज्ञान, कला, राजनीति और जीवन के अन्य पहलूओं में सार्वजनिक अनुग्रह की आशीषों का समर्थन करना चाहिए।

यह समझना कई बार हमें मुश्किल लग सकता है कि पवित्र शास्त्र में सांस्कृतिक पैटर्न हमारे के लिए कैसे लागू होते हैं। लेकिन सामान्य शब्दों में, हमें उन तरीकों पर ध्यान देना चाहिए जिनमें परमेश्वर ने पूरे बाइबल में संस्कृति के विभिन्न आयामों को निर्देशित किया था। जब हम संस्कृति के उन सभी विभिन्न पहलूओं के बारे में जिन्हे पवित्र शास्त्र उजागर करता है तुलना करते हैं, तो हम कम से कम चार तरीकों को पाते जिनमें परमेश्वर ने सांस्कृतिक पैटर्न का निर्देशन किया। उसने कुछ पैटर्न जैसे विवाह और काम की स्थायी रूप से स्वीकृति दी। अन्य पैटर्न का उसने सिर्फ अस्थायी रूप से समर्थन किया, जैसे कि मिस्र से कनान तक इस्राएल की यात्रा के दौरान उनकी जातियों की व्यवस्था। कई बार, पापियों के साथ अपने धैर्य में, परमेश्वर ने अपने लोगों की कुछ सांस्कृतिक गतिविधियों जैसे की बहुविवाह और दासता को, अस्थायी रूप से सहन किया, चाहे भले ही उसने उनका अनुमोदन नहीं किया। और निश्चित रूप से, पूरे पवित्र शास्त्र में, हम कई ऐसे सांस्कृतिक पैटर्न को देखते हैं जिन्हें परमेश्वर की स्थायी अस्वीकृति प्राप्त हुई, जैसे अन्याय और मूर्तिपूजा।

दूसरे शब्दों में, आज अपने जीवन में बाइबल में पाए जाने वाले सांस्कृतिक पैटर्न को लागू करने के लिए, हमें स्वयं अनुच्छेद में परमेश्वर के मूल्यांकन की खोज करनी चाहिए। फिर, हमें बाइबल के दूसरे अनुच्छेदों से प्रासंगिक नैतिक मानकों की खोज करनी चाहिए और बाइबल के जिन सांस्कृतिक तत्वों को हम देखते हैं उनके पीछे की प्रेरणाओं एवं लक्ष्यों को निर्धारित करना चाहिए। इन तरीकों में, हम समझ सकते हैं कि परमेश्वर के प्रति सेवा या उसके प्रति विद्रोह के दो विरोधी सांस्कृतिक आदर्शों का प्रतिनिधित्व बाइबल के अनुच्छेदों में सांस्कृतिक पैटर्न करते हैं। और जब हम ऐसा करते हैं, तो अपने आधुनिक संसार के लिए बाइबल में संस्कृति के उपयुक्त पैटर्न को लागू करने में हम सक्षम बनेंगे।

संस्कृति के महत्व के प्रकाश में और आज संसार में विरोधी सांस्कृतिक आदर्शों के आधुनिक अनुप्रयोग को देखने के बाद, हम अब तीसरे विचार पर ध्यान दे सकते हैं। हमारे समय में जब हम पवित्र शास्त्र को लागू करते हैं तो सांस्कृतिक विविधता के साथ हमें कैसे कार्य करना चाहिए?

विविधता

जब हम संसार के विभिन्न भागों में अलग-अलग विश्वासियों से मिलते हैं, तो यह स्पष्ट है कि हमारी भाषाएं, पहनावे की शैलियाँ, हमारा आहार, संगीत, और कई सांस्कृतिक पैटर्न बहुत अलग हो सकते हैं। यह सच क्यों है? यदि हम सब पवित्र शास्त्र के मानकों का पालन करना चाहते हैं, तो फिर हमारी संस्कृतियों के पैटर्न इतनी सारी अलग-अलग दिशाओं में क्यों गए हैं? खैर, कहने की जरूरत नहीं है, हमारे कुछ मतभेद इसलिए हैं, क्योंकि हम सब उन तरीकों में जीवन जीने में विफल रहे हैं जो पवित्र शास्त्र के प्रति सच्चे हैं। लेकिन हमारी विफलताओं के अलावा, संसार भर में परमेश्वर के लोगों के बीच सांस्कृतिक विविधता की अपेक्षा के लिए कई वैध कारण हैं।

जैसा कि हमने देखा, नई वाचा के युग के उद्घाटन के साथ, परमेश्वर के लोग अब एकमात्र राष्ट्र नहीं थे। और पिछले दो हजार वर्षों के दौरान, जैसे-जैसे सुसमाचार संसार के चारों ओर, और आगे तक फैला है, परमेश्वर के विश्वासपात्र लोगों ने बढ़ती हुई विविध संस्कृतियों में मसीह के लिए जीवन जीने की चुनौती का सामना किया है। यह चुनौती एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाती है। हमें कितनी सांस्कृतिक विविधता की अनुमति देनी चाहिए? हमें क्या सीमाएँ निर्धारित करनी चाहिए?

पवित्र शास्त्र में कई स्थान हैं जो इस प्रश्न को संबोधित करते हैं, लेकिन इस मुद्दे का पता लगाने के लिए सबसे अच्छे स्थानों में से एक 1 कुरिन्थियों 9:19-23 है। इस अनुच्छेद में, पौलुस ने कोरिन्थ की कलीसिया को बताया:

> क्योंकि सबसे स्वतंत्र होने पर भी मैं ने अपने आप को सब का दास बना दिया है कि अधिक लोगों को खींच लाऊँ। मैं यहूदियों के लिये यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊँ। जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उनके लिये मैं व्यवस्था के अधीन न होने पर भी व्यवस्था के अधीन बना कि उन्हें जो व्यवस्था के अधीन हैं, खींच लाऊँ। व्यवस्थाहीनों के लिये मैं - जो परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं परन्तु मसीह की व्यवस्था के अधीन हूँ - व्यवस्थाहीन सा बना कि व्यवस्थाहीनों को खींच लाऊँ। मैं निर्बलों के लिये निर्बल सा बना कि निर्बलों को खींच लाऊँ। मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ। मैं यह सब कुछ सुसमाचार के लिये करता हूँ कि औरों के साथ उसका भागी हो जाऊँ (1 कुरिन्थियों 9:19-23)।

इस अनुच्छेद में, पौलुस ने वर्णन किया कि किस तरह सुसमाचार के अध्यादेश को पूरा करने की उसकी प्रतिबद्धता ने उसे सांस्कृतिक अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं की एक विस्तृत श्रृंखला को अपनाने के लिए प्रेरित किया। जैसा कि वह पद 22 में सारांशित करता है, “मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ।”

ऐसे व्यक्ति के समान जिसने इधर उधर की यात्रा की, पौलुस को असाधारण मात्रा में सांस्कृतिक लचीलेपन का उपयोग करना पड़ा। पद 20 में उसने कहा कि जब वह यहूदी समुदाय में था तो वह “व्यवस्था के अधीन जैसा बना।” और पद 21 में उसने कहा कि जब वह अन्यजाति समुदाय में था तो वह “व्यवस्थाहीन जैसा बना।”

लेकिन ध्यान दीजिए के कैसे पौलुस ने उस सांस्कृतिक विविधता पर सीमाओं को बांधा, जिसे वह अपनाने के लिए तैयार था। पद 20 में उसने कहा, “जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उनके लिये मैं व्यवस्था के अधीन न होने पर भी व्यवस्था के अधीन बना।” दूसरे शब्दों में, पौलुस ने यहूदी समुदायों के सांस्कृतिक पैटर्न का पालन किया, लेकिन वह उस तरह से व्यवस्था के अधीन नहीं था जैसा कि उसके समय के धार्मिक अगुवों ने इसे समझा। पौलुस के समय में अधिकांश फरीसी और धार्मिक अगुवों ने सिर्फ

अपने स्वयं की धार्मिकता का दिखावा करने के लिए व्यवस्था का उपयोग किया। लेकिन, जैसा कि यीशु ने मत्ती 23 में संकेत दिया, इस व्यवहार के कारण दंड और मृत्यु हुई। यहाँ, पौलुस ने समझाया कि उसने उन सांस्कृतिक मानकों को बिना अपनाए संस्कृति को अपनाया जो अंततः उसे सिर्फ परमेश्वर के दंड के तहत लाएंगे।

इसी तरह से, पद 21 में उसने कहा, "मैं व्यवस्थाहीन सा बना (जो परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं परन्तु मसीह की व्यवस्था के अधीन हूँ)।" पौलुस ने अन्यजाति समुदायों की सांस्कृतिक अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को साझा किया, लेकिन जैसा मसीह ने अपने नई वाचा वाले लोगों के लिए इसकी व्याख्या की है, सिर्फ उसी हद तक कि उसने परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन नहीं किया।

बहुत कुछ उसी तरह, सुसमाचार अध्यादेश को पूरा करने के लिए, मसीह के विश्वासयोग्य अनुयायियों को, जब भी वे अन्य सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से लोगों एवं परिस्थितियों का सामना करते हैं, तो पवित्र शास्त्र को अलग रीति से लागू करने के लिए रहना चाहिए। स्थानीय मंडलियाँ, मसीही व्यवसाय, स्कूल, अस्पताल, और यहाँ तक कि मित्रता भी एक दूसरे से अलग रहेंगी। और निश्चित रूप से, जैसे-जैसे समय बीतता है, जब इसमें शामिल लोग एवं परिस्थितियाँ बदलेंगी तो ये समुदाय भी बदलेंगे।

लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि हम किसी भी तरह से जैसा हम चाहें अपने समुदाय की संस्कृतियों को आकार देने के लिए स्वतंत्र हैं। इसके विपरीत, प्रेरित पौलुस के समान, आज मसीह के अनुयायियों को पवित्र शास्त्र के मापदंडों के भीतर रहने के लिए दृढ़ता से प्रतिबद्ध होना चाहिए। जब हम विभिन्न तरीकों में पवित्र शास्त्र को अपने समुदायों के लागू करते हैं, तो उसके प्रति सच्चे बने रहने की यह प्रतिबद्धता आधुनिक अनुप्रयोग के सबसे जटिल पहलूओं में से एक है।

> जब परमेश्वर अपने आप को हमारे लिए प्रकट करता है, तो वह स्थान एवं समय में ऐसा करता है। यह उसके प्रकाशन की महिमा और छुटकारे की उसकी योजना का हिस्सा है। जब हम पुराने नियम के युग से नए नियम के युग तक कार्य करते हैं, तो स्पष्ट है कि हम विभिन्न संस्कृतियों, समय के विभिन्न कालों में लोगों के साथ संपर्क बनाते हैं। वहाँ सभी प्रकार की सांस्कृतिक विविधता है जिसे हम इतिहास में विशेष स्थानों, संस्कृतियों एवं पृष्ठभूमियों के संदर्भ में विशेष स्थानों के साथ बंधा हुआ देखते हैं। हमें कैसे पता चलेगा कि कौन सी विविधता हमारे लिए लागू होती है, इसे कैसे जीना चाहिए? खैर, मैं सोचता हूँ कि सबसे पहले हमें कुछ नैतिक मांगों के मानक के संदर्भ में विविधता का मूल्यांकन करना होगा। कुछ सांस्कृतिक विविधताओं को अस्वीकार करने की आवश्यकता है क्योंकि जैसा परमेश्वर ने हमें बनाया है यह उसके साथ असंगत है — उसके नैतिक मानक क्या हैं, और ये रीति-रिवाज़ — हालांकि ये प्रतिबिंबित कर सकते हैं ... सांस्कृतिक विविधता मूर्तिपूजा को प्रतिबिंबित कर सकती हैं, परमेश्वर और उसके मानकों की अस्वीकृति को प्रतिबिंबित कर सकते हैं।
>
> — डॉ. स्टीफन जे. वेल्लम

पूरे बाइबल इतिहास के दौरान, परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों के हर एक समुदाय ने कुछ सांस्कृतिक पैटर्न को बनाए रखा। लेकिन अन्य सांस्कृतिक पैटर्न समय के साथ बदल गए। बाइबल में हमें मिली संस्कृति के किसी पैटर्न का अनुकरण हमें कितनी बारीकी से करना चाहिए इसे निर्धारित करने का एक तरीका यह ध्यान देना है कि क्या कोई विशेष सांस्कृतिक विशेषता पूरे पवित्र शास्त्र में एक समान है या विभिन्न युगों, लोगों या परिस्थितियों को समायोजित करने के लिए बदल गई है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यदि सांस्कृतिक पैटर्न पवित्र शास्त्र में बदल गए हैं, तो अपने समय में भी उनके परिवर्तनशील होने की अपेक्षा हमें करनी चाहिए। लेकिन यदि पूरे बाइबल इतिहास में संस्कृति के पहलू समान रहे हैं, तो हमें आज अपने लिए उन्हें मानक मानना चाहिए।

उदाहरण के लिए, पिछले 2,000 वर्षों में पारिवारिक संरचनाएं और रहन-सहन बदल गए हैं, लेकिन पवित्र शास्त्र लगातार माता-पिता की आज्ञा मानने के लिए बच्चों को निर्देश देता है। यह आज भी हमारे लिए सच है। और यद्यपि कानूनी प्रणालियाँ संस्कृति से संस्कृति और युग से युग तक विविध प्रकार के होते हैं, पवित्र शास्त्र ने इस तथ्य को कभी नहीं बदला कि जब परमेश्वर के लोगों को गवाही के लिए बुलाया जाता है तो उनसे विश्वासयोग्य गवाह होने की अपेक्षा की जाती है। राजनीतिक प्रणालियां, कपड़े, संगीत, भोजन प्राथमिकताएं, और संस्कृति के कई अन्य पहलु बाइबल इतिहास में बदल गए हैं, लेकिन हमारे परिवारों, कार्य-स्थानों और समुदायों में परमेश्वर का सम्मान एवं उसकी सेवा करने का निर्देश लगातार बना हुआ है।

मसीह के अनुयायियों के रूप में, हर बार जब हम पवित्र शास्त्र में सांस्कृतिक पैटर्न को अपने स्वयं के समय के लिए लागू करते हैं, तो इन निरंतरताओं और अनिरंतरताओं में भेद करने के लिए हमें सावधान रहना चाहिए।

उपसंहार

इस अध्याय में, हमने बाइबल संस्कृति और आधुनिक अनुप्रयोग के कई महत्वपूर्ण आयामों का पता लगाया है। हमने बाइबल के शुरूआती अध्यायों में संस्कृति के बाइबल वाले आधारों को देखा है। हमने उन बाइबल के विकासों को देखा जो दोनों पुराने एवं नए नियमों में संस्कृति में हुए। और हमने पता लगाया कि बाइबल में, संस्कृति के पहलूओं को हमारे पवित्र शास्त्र के आधुनिक अनुप्रयोग को कैसे प्रभावित करना चाहिए।

बाइबल स्वयं स्पष्ट करती है कि मसीह के विश्वासयोग्य अनुयायियों को पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं को व्यक्तियों के रूप में न सिर्फ स्वयं के लिए, बल्कि अपने जीवनों के सांस्कृतिक आयामों के लिए भी लागू करना चाहिए। नई वाचा के युग के दौरान भी, हम अभी भी परमेश्वर के स्वरूप हैं और हमें उन तरीकों में मानव संस्कृति का निर्माण करने के लिए बुलाया गया है जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं। जब तक मसीह वापस नहीं आएगा तब तक यह अध्यादेश, प्रभाव में जारी रहेगा। इसलिए, हमें यह सीखना चाहिए कि आधुनिक संस्कृति के हर आयाम के लिए पवित्र शास्त्र कैसे लागू होता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।